This question paper contains 4 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6266**

Unique Paper Code : **2053100013**

Name of the Paper : **गाँधी-दर्शन और हिंदी साहित्य**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi : DSE**

Semester : **VI**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. गाँधी दर्शन की अवधारणा और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर विचार प्रस्तुत कीजिए। 15

अथवा

विश्व पटल पर गाँधी दर्शन का सम्यक् विवेचन प्रस्तुत कीजिए।

2. 'रामराज गाँधीजी का सपना था' इस कथन का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए। 15

अथवा

गाँधीजी के विचारों में सनातन संस्कृति का क्या स्थान था ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3. 'बापू' कविता में व्यक्त भावनाओं का विश्लेषण कीजिए। यह कविता गाँधीजी के किस रूप को प्रतिबिंबित करती है ? 15

अथवा

हिंदी कविता में गाँधीवादी विचारधारा के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए।

4. हिंदी गद्य साहित्य पर गाँधीवादी विचारधारा का प्रभाव सपष्ट कीजिए। 15

अथवा

'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के आधार पर गाँधीजी के व्यक्तित्व और संघर्षों पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या लिखिए : 8+8=16

(क) अमर सत्य के आगे थरथर,

काँपे विश्व, काँपे विश्वंभर,

हे दुर्जय !

बढ़ो अभय !

जय जय जय !

बढ़ो प्रभंजन आँधी बनकर;

चढ़ो दुर्ग पर गाँधी बनकर;

वीर हृदय !

धीर हृदय !

जय जय जय !

अथवा

क्या हार-जीत खोजे कोई

उस अद्‌भुत पुरुष अहन्ता की,

हो जिसकी संगर-भूमि बिछी

गोदी में जगन्नियन्ता की!

संगर की अद्‌भुत भूमि,

जहाँ पड़ने वाला प्रत्येक कदम-

है विजय : पराजय भी जिसकी

होती न प्रार्थनाओं से कम।

(ख) सप्रसंग व्याख्या लिखिए :

गाँधीजी ने तुलसीदास के 'रामचरितमानस' को अपना प्रिय साहित्य ग्रंथ बनाया था और तुलसीदास जी के भजन, तुलसी के 'मानस' के उद्धरण से गाँधीजी के आश्रम का दिन शुरू होता था। 'रामचरितमानस' में गाँधीजी को भारतीय जनमानस की पूर्णता के दर्शन हुए थे। यही कारण है कि जब स्व. मैथिलीशरण गुप्त ने 'साकेत' पर गाँधीजी की राय चाही तो गाँधीजी ने दो टूक राय दी थी कि उर्मिला का प्रसंग अतिरेक पर पहुँच गया है, जो रामकथा के उद्देश्य से कुछ भटका देता है। इस प्रकार उनमें एक साहित्य की समझ और साहित्य से अधिक जीवन की आवश्यकताओं की समझ के बीच अच्छा-खासा अंतर्द्वंद्व था।

अथवा

गाँधी भाई ने एक ही हथियार हमारे हाथ में दिया है, न वह किसी को काटता है, न मारता है। वह न किसी का मान घटाता है और किसी को बेबात डराता भी नहीं। अपनी राह चलता है और दूसरों को भी सही राह चलने की प्रेरणा देता है। वह न किसी के हुक्म से बँधा है, न हुकूमत से। किसी को हुक्म भी नहीं देता। अपने अन्दर की आवाज सुनो और करो। वह यही कहता है। आपका हथियार दूसरे की हुकूमत से बँधा है। हुकूमत कहती है जो हमारा हुक्म न माने उसे मार डालो। मारने और गुलाम बनाने की रोज-रोज साजिश रचती है। आदमी एक बार अपने इस हथियार को हाथ में ले ले तो उसके मन का डर निकल जाता है। फिर सारी दुनिया उसकी अपनी है और वह सबका है।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 7+7=14

(क) गाँधीजी का आदर्श और वर्तमान की विडंबना

(ख) गाँधीजी का सत्याग्रह और उसका साहित्यिक प्रभाव

(ग) 'महात्मा जी के प्रति' कविता में प्रयुक्त प्रतीक तथा भाषा

(घ) 'रचनाकार गाँधी' पाठ के आधार पर गाँधीजी का रचनात्मक पक्ष।